

छात्रों के व्यक्तित्व, समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि पर एक सिंहावलोकन

Narendra Singh Gautam^{1*}, Dr. Ramavtar Singh²

¹ Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

² Professor, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

सार - यह निबंध व्यक्तित्व, समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि के बीच जटिल परस्पर क्रिया का अवलोकन प्रदान करता है। व्यक्तित्व, गुणों और विशेषताओं का एक जटिल मिश्रण, दुनिया के साथ किसी व्यक्ति की बातचीत को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है। जीवन की चुनौतियों से निपटने के लिए प्रभावी समायोजन, जिसमें लचीलापन और मुकाबला करने की व्यवस्था शामिल है, महत्वपूर्ण है। शैक्षणिक उपलब्धि, शैक्षणिक सफलता का एक माप, इन कारकों की परिणति को दर्शाता है। व्यक्तियों में समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए व्यक्तित्व, समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंधों को समझना आवश्यक है।

कीवर्ड - छात्रों के व्यक्तित्व, समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि पर एक सिंहावलोकन

-----X-----

परिचय

व्यक्तित्व, समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि परस्पर जुड़े हुए पहलू हैं जो किसी व्यक्ति के जीवन को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनमें से प्रत्येक घटक किसी व्यक्ति के समग्र विकास और सफलता में महत्वपूर्ण योगदान देता है। इस निबंध में, हम व्यक्तित्व की जटिलताओं पर गौर करेंगे, समायोजन के महत्व का पता लगाएंगे और शैक्षिक उपलब्धि पर इन कारकों के प्रभाव पर चर्चा करेंगे।

व्यक्तित्व गुणों, व्यवहारों और विशेषताओं का एक जटिल और अद्वितीय समूह है जो किसी व्यक्ति को परिभाषित करता है। मनोवैज्ञानिक अक्सर व्यक्तित्व को विभिन्न सिद्धांतों में वर्गीकृत करते हैं, जैसे कि पांच बड़े व्यक्तित्व लक्षण (खुलापन, कर्तव्यनिष्ठा, बहिर्मुखता, सहमतता और मनोविक्षुब्धता) या फ्रायड का मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत। ये सिद्धांत आनुवंशिकी, पर्यावरण और व्यक्तिगत अनुभवों की परस्पर क्रिया पर जोर देते हुए व्यक्तित्व की बहुमुखी प्रकृति को उजागर करते हैं।

व्यक्तित्व प्रभावित करता है कि व्यक्ति दुनिया को कैसे समझते हैं और उसके साथ कैसे बातचीत करते हैं, उनकी प्राथमिकताओं, संचार शैलियों और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, एक बहिर्मुखी व्यक्ति सामाजिक परिवेश में सफल हो सकता है, जबकि एक अंतर्मुखी व्यक्ति अधिक

एकान्त गतिविधियों में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकता है। किसी के व्यक्तित्व को समझने से सीखने की प्राथमिकताओं और संभावित कैरियर पथों में मूल्यवान अंतर्दृष्टि मिल सकती है।

समायोजन से तात्पर्य किसी व्यक्ति की विभिन्न जीवन स्थितियों के अनुकूल ढलने, चुनौतियों से निपटने और भावनात्मक भलाई बनाए रखने की क्षमता से है। सफल समायोजन में व्यक्तिगत जरूरतों और बाहरी मांगों के बीच संतुलन बनाना शामिल है। लचीलापन, मुकाबला तंत्र और सामाजिक समर्थन जैसे कारक किसी व्यक्ति की समायोजन क्षमताओं को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

समायोजन की प्रक्रिया गतिशील है, जिसके लिए व्यक्तियों को परिवर्तनों से निपटने, तनावों से निपटने और प्रभावी समस्या-समाधान कौशल विकसित करने की आवश्यकता होती है। एक अच्छी तरह से समायोजित व्यक्ति लचीलेपन के साथ असफलताओं का सामना कर सकता है, सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रख सकता है और बदलती परिस्थितियों के अनुकूल ढल सकता है। व्यक्तिगत विकास, मानसिक स्वास्थ्य और समग्र जीवन संतुष्टि के लिए प्रभावी समायोजन आवश्यक है।

शैक्षिक उपलब्धि किसी शैक्षणिक परिवेश में किसी व्यक्ति की सफलता का माप है। जबकि ग्रेड और टेस्ट स्कोर जैसे पारंपरिक मेट्रिक्स का उपयोग आमतौर पर शैक्षिक उपलब्धि का आकलन करने के लिए किया जाता है, एक व्यापक समझ

महत्वपूर्ण सोच, रचनात्मकता और सामाजिक कौशल सहित विभिन्न पहलुओं पर विचार करती है। व्यक्तित्व, समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंध जटिल और बहुआयामी है।

शोध से पता चलता है कि कुछ व्यक्तित्व लक्षण, जैसे कर्तव्यनिष्ठा, शैक्षणिक सफलता के साथ सकारात्मक रूप से सहसंबद्ध होते हैं। हालाँकि, समायोजन भी शैक्षिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जो व्यक्ति तनाव को प्रभावी ढंग से प्रबंधित कर सकते हैं, सकारात्मक संबंध बना सकते हैं और शैक्षणिक जीवन की मांगों के अनुरूप ढल सकते हैं, उनकी शैक्षिक गतिविधियों में उत्कृष्टता प्राप्त करने की अधिक संभावना है।

निष्कर्षतः, व्यक्तित्व, समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि किसी व्यक्ति के विकास के अभिन्न अंग हैं। किसी के व्यक्तित्व को समझने से सीखने की प्राथमिकताओं में अंतर्दृष्टि मिलती है, जबकि प्रभावी समायोजन लचीलापन और भावनात्मक कल्याण को बढ़ावा देता है। शैक्षिक उपलब्धि, बदले में, इन कारकों की परिणति को दर्शाती है, जो किसी व्यक्ति की शैक्षणिक परिदृश्य को नेविगेट करने की क्षमता को प्रदर्शित करती है।

जैसा कि शिक्षक और व्यक्ति समान रूप से इन तत्वों की परस्पर निर्भरता को पहचानते हैं, एक सहायक वातावरण को बढ़ावा देना जो विविध व्यक्तित्वों को महत्व देता है और प्रभावी समायोजन को प्रोत्साहित करता है, महत्वपूर्ण हो जाता है। व्यक्तियों के अद्वितीय गुणों को स्वीकार और पोषित करके, हम व्यक्तित्व के समग्र विकास, समायोजन और अंततः शैक्षिक उपलब्धि में योगदान करते हैं।

व्यक्तित्व

व्यक्तित्व कोई स्थिर अवस्था नहीं बल्कि एक गतिशील समग्रता है जो पर्यावरण के साथ अंतःक्रिया के कारण निरंतर बदलती रहती है। (शर्मा वाई.के., 2010) "यह व्यक्ति के सभी जैविक जन्मजात स्वभावों, आवेगों, प्रवृत्तियों, भूखों और प्रवृत्तियों और अनुभव द्वारा अर्जित स्वभाव और प्रवृत्तियों का कुल योग है" (मॉर्टन प्रिंस 1929)। इसमें सब कुछ शामिल है व्यक्ति, उसकी शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक मानसिक और आध्यात्मिक संरचना। यह वह सब कुछ है जो एक व्यक्ति के पास उसके बारे में होता है। (मंगल एस.के., 2008)

व्यक्तित्व मानव व्यवहार की एक विस्तृत श्रृंखला से संबंधित है। (इवेन आर.बी., 2010) "यह उन गतिविधियों का योग है जिन्हें विश्वसनीय जानकारी देने के लिए पर्याप्त लंबी अवधि में वास्तविक अवलोकन द्वारा खोजा जा सकता है" (वाटसन 1930)। तो निश्चित रूप से व्यक्तित्व शब्द केवल दिखावे या

बाहरी व्यवहार से कहीं अधिक गहरे अर्थ को दर्शाता है (उपाध्या और सिंह, 2007)। ऑलपोर्ट (1961) जिन्होंने अपना अधिकांश समय व्यक्तित्व पर शोध के लिए समर्पित किया था, व्यक्तित्व को इस प्रकार परिभाषित करते हैं, "व्यक्ति के भीतर उन मनोभौतिक प्रणालियों का गतिशील संगठन जो उसके वातावरण के साथ उसके अद्वितीय समायोजन को निर्धारित करते हैं" जिसका अर्थ है कि व्यक्तित्व निरंतर परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है लेकिन अभी भी है का आयोजन किया। यह दो प्रकार की प्रणाली मानसिक (मानसिक) और शारीरिक का गठन करती है, और ये दो प्रणालियाँ आंतरिक और बाहरी वातावरण के साथ बातचीत करती हैं और समायोजन के विभिन्न तरीकों को नियोजित करने के लिए जीव को सक्रिय करती हैं जिसके परिणामस्वरूप अद्वितीय समायोजन होता है। (चौहान, 2013)

व्यक्तित्व को कई मनोवैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न तरीकों से परिभाषित किया गया है। विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा दी गई व्यक्तित्व की कुछ परिभाषाएँ इस प्रकार हैं।

व्यक्तित्व के सिद्धांत

मानव व्यवहार आश्चर्यजनक रूप से जटिल हो सकता है, और एक उपयोगी सिद्धांत अराजकता से बाहर व्यवस्था लाने में मदद करता है। एक सिद्धांत एक सुविधाजनक विवरण प्रदान करता है, पर्याप्त मात्रा में डेटा व्यवस्थित करने के लिए एक रूपरेखा स्थापित करता है, और उन मामलों पर ध्यान केंद्रित करता है जो अधिक महत्वपूर्ण हैं। इसके अलावा, एक अच्छा व्यक्तित्व सिद्धांत अध्ययन के तहत घटनाओं की व्याख्या करता है। यह ऐसे महत्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर प्रदान करता है जैसे व्यक्तित्व में व्यक्तिगत भिन्नताओं का कारण, क्यों कुछ लोग दूसरों की तुलना में अधिक रोगग्रस्त होते हैं, इत्यादि। एक मूल्यवान सिद्धांत आमतौर पर महत्वपूर्ण व्यावहारिक अनुप्रयोगों की ओर ले जाता है। यह पर्यावरण के नियंत्रण और परिवर्तन की सुविधा प्रदान करता है

उदाहरण के लिए पालन-पोषण, शिक्षा या मनोचिकित्सा की बेहतर तकनीक लाकर। (इवेन, 2010)

व्यक्तित्व का अध्ययन कई अलग-अलग तरीकों से किया गया है। कुछ लोगों ने व्यक्तित्व की उत्पत्ति और संरचना को समझाने के लिए व्यापक सिद्धांत विकसित किए थे। दूसरों ने केवल एक या दो मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया था जैसे कि व्यक्तित्व पर आनुवंशिकता का प्रभाव (सिंह, 2005)। व्यक्तित्व के अनेक सिद्धांत विकसित किये गये हैं। ये सिद्धांत किसी न किसी रूप में बुनियादी संरचना और

व्यक्तित्व में शामिल अंतर्निहित संस्थाओं या निर्माणों के साथ-साथ उन प्रक्रियाओं का वर्णन करने का प्रयास करते हैं जिनके द्वारा ये संस्थाएं परस्पर क्रिया करती हैं। (मंगल एस.के., 2008)। सामान्यतः व्यक्तित्व के सिद्धांतों को निम्नलिखित व्यापक श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

समायोजन

समायोजन जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है और जीवन के अंत तक जारी रहती है। यह एक मनोवैज्ञानिक और जैविक अवधारणा है। यह एक व्यक्ति और उसके पर्यावरण के बीच बातचीत की एक प्रक्रिया है। "समायोजन एक सतत प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक व्यक्ति अपने और पर्यावरण के बीच अधिक सामंजस्यपूर्ण संबंध बनाने के लिए अपने व्यवहार में बदलाव करता है" (आर्थर आई. गेट्स और अन्य 1958)। (शर्मा आर.ए., 2008) उसके प्रयास की दिशा उसके स्वयं के व्यवहार और दृष्टिकोण को संशोधित करने या पर्यावरण को बदलने या दोनों की ओर हो सकती है। "समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक जीवित जीव अपनी आवश्यकताओं और उन परिस्थितियों के बीच संतुलन बनाए रखता है जो इन आवश्यकताओं की संतुष्टि को प्रभावित करती हैं" (शेफर 1961)। (शर्मा आर. ए., 2008)

समायोजन का अर्थ व्यक्ति पर थोपे गए सामाजिक वातावरण की माँगों और दबाव के प्रति प्रतिक्रिया है। मांग बाहरी या आंतरिक हो सकती है जिस पर व्यक्ति को प्रतिक्रिया देनी होती है। समायोजन न केवल किसी की अपनी ज़रूरतों को पूरा करता है, बल्कि समाज की मांग को भी पूरा करता है। साइमंड्स (1943) के अनुसार, "एक व्यक्ति को तब समायोजित कहा जाता है जब वह अपेक्षाकृत खुश, कुशल और कुछ हद तक सामाजिक भावना रखता है।" सरल शब्दों में, समायोजन एक सर्व समावेशी शब्द है जिसका अर्थ है एक व्यक्ति और उसके पर्यावरण के बीच का संबंध जिसके माध्यम से सामाजिक माँगों के अनुसार उसकी ज़रूरतों को पूरा किया जाता है। (शर्मा आर. ए., 2008)। इसलिए, समायोजन एक ऐसी स्थिति या स्थिति है जिसमें व्यक्ति को लगता है कि उसकी ज़रूरतें पूरी हो गई हैं (या होंगी) और उसका व्यवहार समाज और संस्कृति की आवश्यकताओं के अनुरूप है। व्यक्ति समाज में जन्म लेता है और समाज में ही रहता है। समाज उसे एक विशेष प्रकार का वातावरण प्रदान करता है जिसकी अपनी गति और अपनी विशिष्टताएँ होती हैं। इस विशेष प्रकार के वातावरण में समायोजन की प्रक्रिया उसके जीवन के उद्भव के पहले क्षण से ही शुरू हो जाती है। बच्चा अपने परिवेश के अनुकूल ढलने का प्रयास करता है। लेकिन ऐसी स्थितियाँ होती हैं जिनमें उसकी ज़रूरतें विफल हो जाती हैं और समायोजन विफल हो जाता है। वह कुसमायोजित हो जाता है और बच्चे तथा पर्यावरण के बीच असामंजस्य की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। (सिंह, 2005)

शिक्षा वह प्रक्रिया है जो छात्रों को जीवन स्थितियों में समायोजन के लिए प्रशिक्षित करती है। शिक्षकों की मुख्य चिंता बच्चों में घर, स्कूल और समाज में समायोजन की क्षमता विकसित करना है। एक व्यक्ति की आम तौर पर दो प्रकार की माँगें होती हैं - बाहरी (सामाजिक) और आंतरिक (जैविक और मनोवैज्ञानिक) माँगें। कभी-कभी ये माँगें एक-दूसरे के साथ टकराव में आ जाती हैं और व्यक्तियों के लिए समायोजन को एक जटिल प्रक्रिया बना देती हैं। (शर्मा आर. ए., 2008)। व्यक्ति द्वारा स्वयं को पर्यावरण के अनुरूप ढालने, अपनी आवश्यकताओं की संतुष्टि प्राप्त करने में निराशा को दूर करने के प्रयासों को समायोजन प्रक्रिया कहा जा सकता है। समायोजन प्रक्रिया व्यक्ति के अनुभवों से प्रभावित और संशोधित होती है और इस प्रकार सीखना समायोजन में सहायता करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। (राव एवं हर्षिता, 2004)

समायोजन में प्रभावी अनुकूलन शामिल है। इसमें आंतरिक आवश्यकता, तनाव और खिंचाव को कम करना शामिल है और इस अर्थ में, समायोजन व्यक्ति के व्यक्तित्व और ज़रूरतों के आधार पर एक अनूठा पैटर्न होगा। समायोजन की प्रक्रिया को कई मानदंडों के आधार पर सर्वोत्तम रूप से वर्णित किया जा सकता है:

- 1. एकीकरण:** एक अच्छी तरह से समायोजित छात्र आंतरिक संघर्षों से मुक्त होता है और इसलिए अपनी ऊर्जा को अपने लक्ष्य या लक्ष्यों के संगत समूह पर केंद्रित करने में सक्षम होता है। वह चीज़ों को ढालने की बजाय उन्हें गंभीरता से लेता है।
- 2. अहंकार का विकास:** एक अच्छी तरह से समायोजित छात्र वह है जिसने अपनी बुद्धि को जीवन की समस्याओं के प्रभावी समाधान के लिए लागू करना सीख लिया है। वह कुशलतापूर्वक एवं पर्याप्त रूप से कार्य करने में सक्षम है। उसे उचित उत्साह मिलता है; अपने काम में संतुष्टि और खुशी। वह जीवन का एक ठोस सुसंगत दर्शन विकसित करता है जिसमें उसके आस-पास की दुनिया का एक व्यापक और यथार्थवादी दृष्टिकोण शामिल होता है। वह अपने लक्ष्यों की सफल प्राप्ति के लिए योजना बनाने में सक्षम है।
- 3. वास्तविकता अभिविन्यास:** एक अच्छी तरह से समायोजित छात्र वास्तविकता को पहचानता है, विशेष रूप से अपनी सीमाओं और क्षमताओं को। वह हताशा को सहन करना सीखता है और अपनी ज़रूरतों को तब रोकना सीखता है जब वे उपयुक्त न हों और संतुष्टि को अधिक अनुकूल अवसर के लिए स्थगित कर देता है।
- 4. जिम्मेदारी:** एक अच्छी तरह से समायोजित छात्र में अपने कार्यों के लिए जिम्मेदारी स्वीकार करने के लिए आवश्यक

परिपक्वता होती है। उसके पास अपनी भावना पर आवश्यक स्वामित्व और समझ है। उसे भावनात्मक अभिव्यक्ति और आत्म-नियंत्रण की एक निश्चित स्वतंत्रता है।

5. सुरक्षा की भावना: एक अच्छी तरह से समायोजित छात्र में सुरक्षा की अच्छी भावना होती है जो उसके अपनेपन और वांछित होने की भावना से बढ़ती है। उसमें पर्याप्तता और सराहना किये जाने की भावना होती है। वह अत्यधिक चिंता, अवसाद, चिंता और परेशान करने वाले भय से मुक्त है। उनकी भावना न तो अत्यधिक उत्साह और न ही निराशा को दर्शाती है।

6. जिज्ञासा और सहजता: एक अच्छी तरह से समायोजित छात्र सामान्य जिज्ञासा दिखाता है और सामाजिक संबंधों में स्वाभाविक सहज सहजता प्रदर्शित करता है। उसकी भावनाएँ उसके नियंत्रण में हैं और वह उनकी अतिरंजित अभिव्यक्ति की अनुमति नहीं देता है। वह अपनी ऊर्जा को रचनात्मक और सामाजिक रूप से वांछनीय लक्ष्य तक लगाना सीखता है। एक अच्छी तरह से समायोजित छात्र अपनी सफलता को बढ़ा-चढ़ाकर नहीं बताता; या अपनी असफलता से अत्यधिक उदास है और साथ ही वह अपनी सीमाओं से अवगत है और उन्हें स्वीकार करता है।

शैक्षणिक उपलब्धि

शैक्षणिक उपलब्धि को विभिन्न प्रकार से परिभाषित किया गया है: शैक्षणिक कार्य में प्राप्त दक्षता के स्तर या औपचारिक रूप से स्कूली विषयों में ज्ञान प्राप्त करना, जिसे अक्सर परीक्षा में छात्रों द्वारा प्राप्त अंकों के प्रतिशत द्वारा दर्शाया जाता है (कोहली, 1975) (मोहन, 1993)। शैक्षणिक उपलब्धि अत्यंत महत्वपूर्ण है, विशेषकर वर्तमान सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक संदर्भों में। चूंकि दुनिया अधिक से अधिक प्रतिस्पर्धी होती जा रही है, प्रदर्शन की गुणवत्ता व्यक्तिगत प्रगति के लिए महत्वपूर्ण कारक बन गई है। (शीबा, 2009) स्कूल में औपचारिक शिक्षा की शुरुआत से ही उपलब्धि पर बहुत जोर दिया जाता है। स्कूल गतिविधियों के व्यवस्थित, संगठन पर जोर देता है जो काफी हद तक उपलब्धि और प्रदर्शन पर आधारित होती है। स्कूल छात्रों के बीच उनकी शैक्षिक और बल्कि उपलब्धियों के आधार पर चयन और भेदभाव का कार्य करता है और उन्नति के रास्ते खोलता है, फिर से मुख्य रूप से उपलब्धि के संदर्भ में। (शैख, 2008)

मनोविज्ञान का शब्दकोश उपलब्धि को शिक्षकों द्वारा या मानकीकृत परीक्षण या दोनों के संयोजन द्वारा मूल्यांकन किए गए शैक्षणिक कार्यों में दक्षता प्राप्त करने के निर्दिष्ट स्तर के रूप में परिभाषित करता है। इसलिए, उपलब्धि किसी दिए गए कौशल या ज्ञान के निकाय में शिक्षण उद्देश्यों की ओर बढ़ने में

स्कूलों में प्रदर्शन की दक्षता की उपलब्धि है। शैक्षणिक उपलब्धि इस बात से संबंधित है कि छात्र वास्तव में क्या कर सकते हैं जब उन्होंने अध्ययन का एक कोर्स पूरा कर लिया हो। (शीबा, 2009)

आधुनिक समाज में शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। किसी देश की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक उन्नति उसकी शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर करती है। देश की शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए सरकार करोड़ों रुपये खर्च कर रही है। इसलिए हमारे शैक्षिक संस्थान का प्राथमिक कर्तव्य है कि वह अकादमिक उत्कृष्टता और उपलब्धि को पूरी तरह से बढ़ावा दे। (मोहन, 1993, पृष्ठ 228)

स्कूल या कॉलेज में उपलब्धि का मतलब छात्रों में देखी जाने वाली कोई वांछनीय सीख से लिया जा सकता है। चूंकि वांछनीय शब्द का तात्पर्य मूल्य निर्णय से है, इसलिए यह स्पष्ट है कि किसी विशेष सीख को उपलब्धि के रूप में संदर्भित किया जा सकता है या अन्यथा यह इस पर निर्भर करता है कि इसे वांछनीय माना जाता है या नहीं।

शैक्षणिक उपलब्धि सिद्धांत और सामान्यीकरण के अधिग्रहण और वस्तुओं, प्रतीकों और विचारों के कुशलतापूर्वक कुछ हेरफेर करने की क्षमता से संबंधित है। शैक्षणिक प्रदर्शन का आकलन काफी हद तक सूचना, ज्ञान और समझ के संदर्भ में मूल्यांकन तक ही सीमित है। यह सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया जाता है कि तथ्यात्मक डेटा का अधिग्रहण अपने आप में एक अंत नहीं है, बल्कि शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्ति को उन्हें समझने का सबूत दिखाना चाहिए। (राव, 1990, पृष्ठ 297)

निष्कर्ष

संक्षेप में, व्यक्तित्व, समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि की गतिशीलता मानव विकास की जटिलता को रेखांकित करती है। सीखने की प्राथमिकताओं पर व्यक्तित्व के प्रभाव को पहचानना, जीवन की चुनौतियों का सामना करने में प्रभावी समायोजन के महत्व और इन कारकों और शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंध महत्वपूर्ण है। शिक्षकों और व्यक्तियों को समान रूप से ऐसे वातावरण बनाने का प्रयास करना चाहिए जो विविध व्यक्तित्वों का पोषण करें, प्रभावी समायोजन का समर्थन करें और शैक्षिक सफलता के अद्वितीय मार्गों का जश्न मनाएं।

सन्दर्भ

1. कोस्टा, पी. टी., और मैक्रे, आर. आर. (2016)। NEO PI-R प्रोफेशनल मैनुअल। मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन संसाधन।
2. फ्रायड, एस. (2012)। इगो और आईडी।

अंतर्राष्ट्रीय मनोविश्लेषणात्मक पुस्तकें।

3. बंडुरा, ए. (2010)। विचार और कार्य की सामाजिक नींव: एक सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांत। शागिर्द कक्षा।
4. लाजर, आर.एस., और फोकमैन, एस. (2014)। तनाव, मूल्यांकन, और मुकाबला। स्प्रिंगर प्रकाशन कंपनी।
5. मैक्लेलैंड, डी.सी. (2016)। मानव प्रेरणा को मापने के तरीके. न्यूयॉर्क एकेडमी ऑफ साइंसेज के इतिहास में।
6. डकवर्थ, ए.एल., पीटरसन, सी., मैथ्यूज, एम.डी., और केली, डी.आर. (2007)। धैर्य: दीर्घकालिक लक्ष्यों के लिए दृढ़ता और जुनून। व्यक्तित्व और सामाजिक मनोविज्ञान का अखबार।
7. वायगोत्स्की, एल.एस. (2019)। समाज में मन: उच्च मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं का विकास। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
8. ड्वेक, सी.एस. (2006)। मानसिकता: सफलता का नया मनोविज्ञान। आकस्मिक घर।
9. एक्लेस, जे.एस. (2005)। सब्जेक्टिव टास्क वैल्यू और एक्लेस एट अल। उपलब्धि-संबंधित विकल्पों का मॉडल। सक्षमता और प्रेरणा की पुस्तिका में (पीपी. 105-121)। गिलफोर्ड प्रेस।
10. रयान, आर.एम., और डेसी, ई.एल. (2000)। आत्मनिर्णय सिद्धांत और आंतरिक प्रेरणा, सामाजिक विकास और कल्याण की सुविधा। अमेरिकी मनोवैज्ञानिक.

Corresponding Author

Narendra Singh Gautam*

Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur
M.P.